ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-9* october- 2017
Innovation The Research Concept

आधुनिकीकरण एवं जनसंचार माध्यमों का महिलाओं पर प्रभाव (मीरजापुर जनपद के लालगंज ब्लाक पर आधारित महिलाओं में परिवार नियोजन के विशेष सन्दर्भ में एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण)

आर. के. मौर्या
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय पी.जी. कालेज,
सैदपुर, गाजीपुर

सारांश

आधुनिकीकरण के अनेक आदर्श पश्चिमी देशों से लिए गये है। लेकिन उनका स्वरूप अधिकांशतः भारतीय है। यहां के शिक्षित वर्ग को पश्चिमी शिक्षा मिली थी, फिर भी इन्होनें आश्चर्यजनिक ढंग से परम्परागत धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों का पोषण किया, इन्होनें भारत के वर्तमान एवं भावी विकास के परम्परागत एवं आधुनिकवाद दोनो के ही मूल्यों एवं`विश्वासों का सम्मिलन करने का प्रयास किया।

मुख्य शब्द : परिवार नियोजन, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, आधुनिकीकरण

प्रस्तावना

संचार के मुख्यतः तीन पहलू होते हैं, वैयक्तिक, सामूहिक और जनसंचार। जनसंचार का व्यापक क्षेत्र होने के कारण इसमें जिम्मेदारी अनिवार्य है। एक राजनेता के भाषण देने से लेकर अखबार में छपी खबर, गाँव में नौटंकी का आयोजन, रेडियों पर प्रसारित वार्ता, फिल्म या टी.वी. के पर्दे का श्रव्य, दृश्य प्रस्तुतियां, चौराहे पर लगा विज्ञापन पट्ट आदि सब जनसंचार के अन्तर्गत आते हैं, अर्थात् जिसमें पाठक, श्रोता, दर्शकों की संख्या विशाल हो। यह माध्यम किताबें, नाटक, स्वांग, कठपुतली, प्रदर्शनी, पोस्टर, कम्प्यूटर सभाएं आदि भी हो सकते हैं। इस तरह कई मायनों में ऐसा संचार संवेदनशील भी होता है। तथा जैसे–जैसे वैज्ञानिक तकनीकों का विकास होता जा रहा है, इस क्षेत्र में उत्तरोत्तर नवीनता, सूक्ष्मता और विविधता दिखाई दे रही है।

डेनियल लर्नर (1960) परम्परागत समाजों में साक्षरता और सूचना सम्प्रेषण के साधनों के पारस्परिक सम्बन्ध को दर्शाते हुए कहा है कि सम्प्रेषण के साधनों द्वारा साक्षरता का विकास होता है और साक्षरता क`विकास द्वारा सम्प्रषण के साधनों का और अधिक उपयोग होता है। अतः सम्प्रेषण के साधनों का विस्तार और उसमें सहभागिता, नगरीकरण औद्योगीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जनसंचार माध्यम महिलाओं के पारस्परिक और संकुचित रूप को ही दिखाते आते है। पुत्री को पुत्र से हीन मानना, महिलाओं द्वारा सन्तान के रूप में पुत्र की कामना करना, पुत्रियों को जन्म से ही उनके दहेज व विवाह की चिन्ता करना, सौन्दर्य और मातृत्व के गौरवमान से महिलाओं को अलंकृत करना, उनका कार्य क्षेत्र घर के चार–दिवारी तक सीमित करना आदि परम्परागत व विरोधी अवधारणा है, ऐसा नही है कि जनसंचार माध्यमों के द्वारा हर ओर महिलाओं की उपेक्षा ही है। इसी बीच तमाम ऐसे सकारात्मक सार्थक पहल दृष्टिगोचर हुई है जो महिलाओं से जुड़ी समस्याओं को सही परिप्रेक्ष्य में देखते हैं।

जनसंचार मानव समाज का जाल है (एल. डब्ल्यू पाई 1974) क्योंकि प्रत्येक सामाजिक क्रिया किसी न किसी प्रकार सम्प्रेषण की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। जिसके अन्तर्गत कामकाजी महिलाओं की समस्याएं सफल महिलाओं से संवाद महिला विषयों पर खुली परिचर्चा आदि कार्यक्रम सामने आये हैं। किन्तु कोई ठोस या नीतीगत योजना इस दिशा में नही आ सकी है।

सूचना संचार व्यवस्था हमारे सामाजिक पर्यावरण का एक आवश्यक एवं सर्वव्यापी अंग है (पूल 1968) ।

समस्या परिचय

आधुनिकीकरण समसामयिक तकनीकी, सामाजिक आर्थिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक आविर्भूत व्यवस्था को व्यक्त करता है। एम.एन. श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण की अवधारणा दी है उन्होनें आधुनिकीकरण को निम्नलिखित भागों के अन्तर्गत अभिव्यक्त किया है।

1. भौतिक संस्कृति।
2. समाजिक संस्थाएं।
3. ज्ञान, मूल्य एवं मनोवृत्तियां।

यथार्थ ये तीनों एक दूसरे से पारस्परिक रूप से सम्बन्धित है, फिर भी इनमें कुछ सीमा तक अपनी स्वतंत्रता है। आधुनिकीकरण के विभिन्न आयामह`, इसको समाज, समूह या व्यक्ति के स्तर पर समझा जा सकता है। इसको आर्थिक, राजनितिक व सामाजिक स्तर पर समझाा जा सकता है।

आधुनिकीकरण कोई दर्शन या आन्दोलन नही है, जिसमें स्पष्ट मूल्य व्यवस्था हो, यह तो परिवर्तन की एक प्रक्रिया है। आजकल आधुनिकीकरण शब्द को वृहद अर्थ दिया जाता है। इसको एक ऐसा सामाजिक परिवर्तन माना जाता है जिसमें विज्ञान व तकनीकी के तत्व शामिल होते हैं।

आधुनिकीकरण सामाजिक संगठन के संरचनात्मक पक्ष और समाज के सामाजिक जनसंख्यात्मक दोनों पक्षों की व्याख्या करता है।

भारत में 1946 तक किसी भी क्षेत्र में कोई आधुनिक शिक्षा, संचार व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधा विकसित नही थी। गाँवों से शहर जाने वाले मार्ग व यातायात की सुविधा भी नही थी। 1950 के बाद विशेषकर 1956 में जब सामुदायिक हविकास कार्यक्रम अपनाया गया तब कुछ गाँवों में शिक्षा एवं संचार के केन्द्र खोले गये। स्वास्थ्य केन्द्र लगभग हर बड़े व मध्य स्तर के ग्रामों में खोले गये। 1960 और 1965 के मध्य गाँवों में बिजली पहुंचाई गयी। बहुत सी नई कृषि तकनीक, खाद, बीज आदि को अपनाया जाने लगा। 1965 और 1970 के बीच कई कल्याण कार्यक्रम शिक्षा व स्वास्थ्य केन्द्रों का विस्तार किया गया । विचारों में परिवर्तन व प्रगति आधुनिकीकरण की प्रथम आधारशिला है। आधुनिकीकरण का प्रभाव महिलाओं पर भी देखा जा सकता है। जो महिलाएं शिक्षित व सम्पन्न परिवार से हैं उनके विचार काफी हद तक आधुनिक हो जाते हैं। वे अन्धविश्वासों व परम्पराओं को नही मानती और अपने से सम्बन्धित निर्णय स्वयं लेने में काफी सक्षमह`। परन्तु दुर्भाग्य से भारत में महिलाओं से जुड़े प्रश्न चाहे वह शिक्षा से हो या समानता से, सुरक्षा के अधिकार से हो या स्वास्थ्य से सभी पर इनकी उपेक्षा की जाती है, जो निःसंदेह चिन्तनीय है। इनमें ग्रामीण महिलाएं सर्वाधिक उपेक्षित है। भ्रूण हत्याएं, दहेज उत्पीड़न, नारी हिंसा, बाल–श्रम जैसी समस्याएं बढ़ रही है जो कत्तई महिलाओं के पक्ष में नही है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए परिवार नियोजन एक मुख्य तरीका है। आधुनिकता के अन्य आयाम एक–दूसरे से अन्तः सम्बन्धित व प्रभावित होते हैं।

इस प्रकार आधुनिकता परिवार नियोजन से सकारात्मक रूप से जुड़ी है और आधुनिक व्यक्ति परिवार नियोजन को अधिक अपनाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन सामाजिक घटनाओं का ही वैज्ञानिक अध्ययन है और कोई भी अध्ययन तब तक वैज्ञानिक नहीं हो सकता, जब तक उसमें वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग न किया जाय, लेकिन किसी भी वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि अध्ययन विषय से सम्बन्धित उद्देश्यों का निर्धारण न कर लिया जाय। इस प्रकार अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. उत्तरदाताओं पर संचार माध्यमों द्वारा स्वास्थ्य ज्ञान व परिवार कल्याण का अध्ययन।
2. उत्तरदाताओं में परिवार नियोजन जागरूकता का अध्ययन।
3. उत्तरदाताओं में आधुनिकीकरण के प्रभाव से प्रजनन दर कम होने का अध्ययन।
4. नवदम्पति द्वारा परिवार नियोजन साधनों को अपनाने का विश्लेषण।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन निदानात्मक शोध है। इसके अन्तर्गत आधुनिकीकरण एवं जनसंचार माध्यमों को महिलाओं पर प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। संक्षिप्त अनुसूची के माध्यक से साक्षात्कार विधि द्वारा प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया। यह साक्षात्कार गाँव में उनके घर पर किया गया इसमें अवलोकन और वैयक्तिक इतिवृत्ति पद्धति का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का विषय अपने आप में अत्यन्त कहन एवं व्यापक है। अतः इस विषय की गहनता, व्यापकता एवं सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए समस्या को समेट पाना व्यावहारिक आधार पर किसी भी एक अध्ययन में सम्भव नही है, अतः विविधताओं के बावजूद कुछ समाज विशेषज्ञों को आधार बनाकर प्रतिनिधि गांव का चयन करना अनुसन्धान का एक अनिवार्य अंग बन गया है। उत्तर–प्रदेश के दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र के सबसे पिछड़ा हुआ मीरजापुर जनपद के लालगंज ब्लाक के तीन गाँवों का चयन किया गया है। इन गाँवों के चयन में हिन्दू व मुस्लिम महिलाओं की संख्या का ध्यान रखा गया है, इन गाँवों के समग्र परिवारों में से निर्दशन प्रणाली का अनुसरण किया गया है प्रतिदर्श का चयन करते समय रामपुर वासित अली 1345, रानीबारी 1273, लाली माटी 1189 परिवार है।

इन सभी तीनों गाँवों में से क्रमशः 35–35 व 30 महिलाओं का चयन किया गया है। कुल मिलाकर 100 हिन्दू व मुस्लिम महिलाओं को अध्ययन हेतु चुना गया है। मुस्लिम महिलाओं ने परिवार नियोजन के बारे में यह कहते हुए उत्तर दी कि उन्हें कहीं भी सार्वजनिक रूप से समाज में उजागर (प्रदर्शित) न किया जाय।

सामाजिक समस्या व चेतना

अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना सरकार तथा हम सभी की पहली प्राथमिकता है, साथ ही संसाधनों के अभाव तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण मंहगाई, बेरोजगारी, तथा आर्थिक समस्याओं ने व्यक्तियों को कई जटिलताओं में जकड़ रखा है। शिक्षा की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, साथ ही मंहगें फिस व किताब–कापियों का व्यय तथा बड़े परिवार का पालन करना, उन्हें आवश्यक पोषाहार उपलब्ध कराना आज के संघर्षमय जीवन को और भी बोझिल बना देते हैं।

इन सब सामाजिक समस्याओं ने महिलाओं की चेतना को अवश्य प्रभावित किया है–

तालिका संख्या –1

सामाजिक समस्या व चेतना का विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
मंहगाई, बेरोजगारी, आर्थिक समस्या	61	61.00
शिक्षा की समस्या	12	12.00
पति द्वारा वैयक्तिक दबाव	20	20.00
आधुनिकीकरण व जनमाध्यमों का प्रभाव	04	4.00
अन्य	03	3.00
	100	**100.00**

तलिका संख्या–1 के सम्पूर्ण विवेचन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 61.00 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया है कि मंहगाई, बेरोजगारी तथा आर्थिक समस्याओं ने इनकी चेतना को जागृत किया वे इसी कारण परिवार बढ़ाना नही चाहती जबकि 20.00 प्रतिशत महिलाएं अपने पति द्वारा दिये गये निर्देश से परिवार को सीमित रखना चाहती है तथा 12.00 प्रतिशत महिलाएं शिक्षा की समस्या से प्रभावित हैं और 4.00 प्रतिशत महिलाएं आधुनिकीकरण व जन माध्यमों से प्रभावित हैं व 3.00 प्रतिशत महिलाओं ने अन्य कारणों को परिवार नियोजन सम्बन्धी चेतना से खुद को प्रभावित मानती है।

स्वास्थ्य ज्ञान व परिवार कल्याण

आधुनिकता से लेकर पारम्परिकता तक संचार के अनेक माध्यम आज उपलब्ध है, लेकिन समाज के आचरण, दृष्टिकोण और विचारों में जितना परिवर्तन आज टी.वी. फिल्म, पत्र पत्रिकाओं के जरिये आया, उतना शायद अन्य माध्यमों से नही। यही वजह है कि आये दिन अपनी गतिविधियों एवं प्रस्तुतियों में अक्सर महिलाओं व उनसे जुड़े अन्य मुद्दे इनके आलोचनाओं के केन्द्र में रहते हैं। समाज की आधी आबादी अर्थात् महिलाओं का इससे अप्रभावित रहना सम्भव नही है।

तालिका संख्या –2

स्वास्थ्य ज्ञान व परिवार कल्याण को प्रभावित करने का विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
रेडियो, टी. वी.	28	28.00
पारिवारिक पत्रिका	19	19.00
डाक्टरों से सलाह	38	38.00
पति का निर्देश	15	15.00
योग	**100**	**100.00**

तलिका संख्या–02 के सम्पूर्ण विवरण से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 38.00 प्रतिशत महिलाएं डाक्टरों की राय से अपने स्वास्थ्य की देख–भाल करती हैं तथा परिवार कल्याण के उपाय को सुरक्षित मानती है जबकि 28.00 प्रतिशत महिलाएं परिवार नियोजन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी टी.वी. व रेडियो के कार्यक्रमों से प्राप्त करती हैं तथा 19.00 प्रतिशत महिलाएं पारिवारिक पत्रिका के माध्यम से प्रभावति हैं और 15.00 प्रतिशत महिलाएं पति के निर्देश पर चलना चाहती हैं और उन्हीं के माध्यम से अपनी स्वास्थ्य व परिवार नियोजन सम्बन्धी क्रियाओं को सम्पादित करती हैं।

महिला स्वास्थ्य व मातृ–शिशु टीकाकरण

भारत सरकार तथा स्वैच्छिक संगठनों का प्रयास तथा महिला स्वास्थ्य व मातृ शिशु कल्याण केन्द्र देश के लिए कोई नई बात नही है। स्वैच्छिक प्रयासों का आधार मानव सेवा के नैतिक उद्देश्य से प्रेरित रहा है। दीन–दुखियों की सहायता हो या माता–शिशु के प्रसवोपरान्त चिकित्सीय देखभाल सभी कुछ स्वैच्छिक प्रयास के आधार पर होता आया है। जिसमें सेवा भाव निहीत होता है। बच्चों की देखभाल, टीकाकरण, उचित परिस्थिति में प्रसव तथा अन्य रोगोपचार हेतु ये संस्थाएं प्रतिबद्ध हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी पहुँच जरूरतमन्दों तक अवश्य पहुँच जाती है। या स्वयम्सेवी संगठन जरूरतमन्दों की आवश्यकताएं पूरी करने की कोशिश करते हैं।

तालिका संख्या –3

महिला स्वास्थ्य व मातृ–शिशु कल्याण संस्थाओं द्वारा टीकाकरण का विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	88	88.00
नहीं	12	12.00
योग	**100**	**100.00**

तालिका संख्या–03 के सम्पूर्ण विश्लेषणा से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 88.00 प्रतिशत महिलाओं ने स्वीकार किया कि महिला संगठनों व स्वैच्छिक स्वास्थ्य तथा मातृ–शिशु कल्याण संस्थाओं द्वारा किये गये टीकाकरण व देख–भाल से सन्तुष्ट है, जबकि 12.00 प्रतिशत महिलाएं स्वैच्छिक संगठन व महिला कल्याण मातृ–शिशु संस्थाओं के क्रिया विधि से प्रभावित नही है।

आधुनिक शिक्षित महिलाएं एवं परिवार नियोजन जागरूकता

शिक्षा मनुष्य के विचार व दृष्टिकोण में तर्कयुक्त परिवर्तन लाता है। जो महिलाएं शिक्षित हैं, वे अपने भविष्य, स्वास्थ्य व परिवार तथा परिवार कल्याण की बातें

स्वयं सोच–समझकर निर्णय लेती हैं। उनमें निर्णय करने की क्षमता का विकास सहजता से हो जाता है। शिक्षित व आधुनिक महिलाएं नौकरी व व्यवसाय को महत्व देकर परिवार की आर्थिक स्थिति में सहयोग देती हैं। इस तरह वे अपने परिवार को सीमित रखने हेतु भी पूर्ण जागरूक रहती हैं।

तालिका संख्या –4

आधुनिक व शिक्षित महिलाओं का परिवार नियोजन जागरूकता का विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	70	70.00
नहीं	12	12.00
उदासीन	18	18.00
योग	**100**	**100.00**

तालिका संख्या 04 के विवेचन से ज्ञात होता है कि अधिकांश 70.00 प्रतिशत आधुनिक व शिक्षित महिलाएं परिवार नियोजन व प्रजननता के प्रति अधिक जागरूक है जबकि 18.00 प्रतिशत महिलाएं अभी भी ग्रामीण परिवेश के कारण उदासीन है तथा 12.00 प्रतिशत महिलाएं परिवार नियोजन व प्रजननता को अपने परिवार अर्थात् पति या सास के आदेशों का पालन करती हैं।

नव–दम्पत्ति में परिवार नियोजन

आधुनिकीकरण आधुनिक समय की सर्वाधिक प्रचलित धारणा है। परम्परा से हटकर तर्कयुक्त किया गया कार्य आधुनिकता की श्रेणी में रखा जाने लगा है। बदलते समय के कारण परम्पराओं ने आधुनिकता का रूप ले लिया है और इस कारण अब परिवार नियोजन को अनुचित नही माना जाता शिक्षा व आधुनिक विचारों ने इस दृष्टिकोण को सही नहीं माना कि पुत्र–पुत्री से श्रेष्ठ है। पुत्र–पुत्री में कोई भेद–भाव आधुनिक विचार से नही है। अतः यह देखा गया कि पुत्र या पुत्री (अब केवल एक सन्तान) की देखभाल नव–दम्पत्ति अपनी जिम्मेदारी समझते हैं, अब परिवार नियोजन का महत्व शिक्षित व आधुनिक महिलाएं अधिक समझती हैं।

तालिका संख्या –5

नव–दम्पत्ति में परिवार नियोजन अपनाने व आधुनिकता का विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	72	72.00
न्हीं	28	28.00
योग	**100**	**100.00**

तालिका संख्या 05 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 72.00 प्रतिशत महिलाएं यह स्वीकार करती है कि नव–दम्पत्तियों द्वारा परिवार नियोजन अभिकरण अपनाना, आधुनिकीकरण से घनात्मक रू से सम्बन्धित है जबकि 28.00 प्रतिशत महिलाएं इससे सहमत नही है।

आधुनिकीकरण का प्रभाव एवं परिवार नियोजन

आधुनिक समाजों में परिवर्तन की इच्छा होती है। इस इच्छा के भी कई कारण है। आज भौतिक उत्पादन तेजी से बढ़ रहा है। अतः नये अनुसन्धानों से व्यक्ति सम्बद्ध होता जा रहा है, जिससे परिवर्तन की प्रक्रिया की गति बढ़ती जा रही है। समाज में अब लोगों की ऐसी धारणा बन गयी है कि अब परम्पराओं से हटकर आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं। अब आधुनिकीकरण का प्रभाव सामाजिक परम्पराओं पर पड़ना स्वभाविक है यह प्रभाव जनसंचार माध्यमों ने सरल बना दिया है।

तालिका संख्या –6

आधुनिकीकरण का प्रभाव व परिवार नियोजन का विवरण

विवरण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	71	71.00
न्हीं	18	18.00
उदासीन	11	11.00
योग	**100**	**100.00**

तालिका संख्या–06 के सम्पूर्ण अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 71.00 प्रतिशत महिलाएं स्वीकार करती है कि आधुनिकीकरण जन माध्यमों प्रभाव महिलओं के प्रजनन दर पर परिवार नियोजनों के प्रयोग से कम हुआ है तथा 18.00 प्रतिशत महिलाएं इस तथ्य को स्वीकार नही करती हैं एवं 11.00 प्रतिशत महिलाएं इस बारे में कुछ भी नहीं कहना चाहती हैं।

निष्कर्ष

समाज में आधुनिकता का प्रभाव संचार, शिक्षा तथा जनसंख्या नियन्त्रण पर स्पष्ट रू से देखा जा सकता है। आधुनिकीकरण के कारण ही नव–दम्पत्तियों ने जनसंख्या नियन्त्रण हेतु परिवार नियोजन को अपना लिया। छोटा परिवार आधुनिकता के सन्दर्भ में अनुकूल माना जाता है। आधुनिकीकरण के कारण बिलम्ब विवाह को प्राथमिकता दी गयी है। जिससे जनसंख्या नियन्त्रण व बच्चों की संख्या अब लोग स्वयं सीमित कर रहे हैं। उच्च शिक्षित मुस्लिम परिवार की महिलाएं भी अब आधुनिकीकरण की ओर अग्रसर हो रही है तथ जनसंख्या नियन्त्रण में सहयोग कर रही हैं। ऐसा अध्ययन के दौरान महसूस किया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Lerner Daniel : The Passing Away of Traditional Society, Free Press, 1958*
2. *Pye L.W. (1972) : Communications and Political Development, Radha Krishna Prakashn, New Delhi.*
3. *Pool IDS (1968): the Role of Communication in the process of modemization and Technological change in Best F. Hostility and W.E. Moore Led.) Industrializations and Society (Monlon)(UNESCO).*
4. *Srivivas, M.N. (1972): Social Change In Modern India (Indian Edition) Orient Lorgmen, New Delhi.*
5. *Gore, M.S.: Educations and Modernizations in India, Rawat Publications, Jaipur 1982.*
6. *Eiserstad t, S.N.: Modernizations : Protest and Change, Prentice Hall of India, New Delhi, 1969.*
7. *A.K. Singh (1984) : Health Modernity Concept and Correlates Social Changes, Council for Social Development, New Delhi, Vol.14, No.13, PP.3-16.*
8. *M.N. Krishna Reddy: Fertility and Family Planning Behaviour in Indian Society, Kanishka Publishers Distributors, New Delhi, 02, 1996.*
9. *District Statics Paper-2016, Finance and Statical officer, Mirzapur, Pg-83.*